IMPACT FACTOR GIF 2.3409 U.G.C. NO. 63535

www.shodh-prakalpresearch.com

शोध-प्रकल्प
त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

ISSN 2278-3911

भारत में पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण कुंदकुंद ज्ञानपीठ, इंदौर के संदर्भ में

मंजुला जैन
डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय,
कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. संगीता सिंह
डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय,
कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

सारांशः भारत में विश्व का सर्वाधिक 50 लाख से ज्यादा पांडुलिपियों का भंडार है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों व राज्यों में पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण का कार्य चल रहा है। मध्यप्रदेश सहित इंदौर में विशेषकर जैन संप्रदाय की महत्वपूर्ण संस्था आचार्य कुंदकुंद ज्ञानपीठ द्वारा जैन दुर्लभ ग्रंथों व पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण का कार्य किया जा रहा है। इस शोधपत्र अध्ययन में डिजिटलीकरण में कुंदकुंद ज्ञानपीठ का योगदान, पांडुलिपि रिर्सोस केंद्र (एम.आर.सी.) एवं पांडुलिपि संरक्षण केंद्र (एम.सी.सी.) द्वारा पुरातात्विक संग्रह और पांडुलिपियों के संरक्षण में किए जा रहे कार्यों को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही देशभर में चलाए जा रहे पांडुलिपि कार्यक्रमों व डिजिटलीकरण पर निष्कर्ष एवं सुझावों को भी प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना

भारत में विश्व का सबसे प्राचीन और सर्वाधिक वृहद भंडार पांडुलिपियों का है। भारत में 50 लाख से ज्यादा पांडुलिपियां चीड़ पत्र, ताम्र पत्र, लकड़ी, वस्त्र, भोजपत्र, पत्थरों सहित विभिन्न रूपों में प्राप्त हुई हैं। भारत में मुगल शासकों, अंग्रेजों, ब्रिटिश शासकों, फारसियों सहित कई राजाओं के आक्रमणों और आधिपत्य स्थापित करने के कारण यहां कई विविधताओं को समेटे कई संस्कृतियों और एतिहासिक प्रमाणों को उजागर करती हुई पांडुलिपियां और दुर्लभ प्रलेख प्राप्त हुए हैं। पांडुलिपियां किसी भी रूप में किसी भी प्रकार पर हस्तलिखित प्रलेख होते हैं जिसमें किसी घटना का वृत्तांत, विभिन्न विषयों का विवरण, चित्र प्रस्तुति, धर्मग्रंथ, श्रुतलेखन, समस्या आदि का उल्लिखित होते हैं। पांडुलिपियां मूल प्रलेख होते हैं जो किसी देश की संस्कृति और सभ्यता के विकास की जानकारी देते हैं। पांडुलिपियां कई प्रकारों जैसे डिजाइन या नक्शा, लिपि, आलेख, संरचना, चित्रों एवं दृष्टांत से संबंधित होते हैं। पांडुलिपियां इतिहास, सभ्यता के विकास की जानकारी देने वाले महत्वपूर्ण स्त्रोत होते हैं। भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत न्यास (इंटैक) के डॉ. एस.सी. बिस्वास और एम.के.प्रजापति द्वारा वर्ष 1988–1990 में किए गए सर्वे, 100 से ज्यादा मुद्रित सूची पत्रों एवं 70 पुस्तकालयों, संस्थाओं और व्यक्तिगत संबंधित हस्तलिखित सूची से यह प्रमाणित हुआ है कि भारत में 50 लाख पांडुलिपियों का संग्रह है। भारतीय पांडुलिपियां यूरीपियन देशों में करीब 60,000 और दक्षिण एशिया और दक्षिण एशियाई देशों में 1,50,000 पांडुलिपियां हैं। सूचीपत्रों में 10 लाख पांडुलिपियां अभिलिखित हैं। किए गए शोध अध्ययनों के अनुसार 67 प्रतिशत पांडुलिपियां संस्कृत भाषा में, 25 प्रतिशत अन्य भारतीय भाषाओं में एवं 8 फीसदी अरबी, फारसी, तिब्बती भाषाओं से संबंधित हैं। (स्त्रोत : प्रोजेक्ट डॉक्यूमेंट एनएमएम, 2003 इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंफर्मेशन रिसर्च, वॉल्यूम 1.नं. 1, सिंत.,2011)

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. भारत में पांडुलिपियों की वर्तमान स्थिति ज्ञात करना।
2. पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण में कार्य करने वाले विभिन्न संगठनों के योगदान की जानकारी एकत्र करना।
3. कुंदकुंद ज्ञानपीठ द्वारा डिजिटलीकृत किए गए पांडुलिपियों की स्थिति को दर्शाना।

अध्ययन का क्षेत्र एवं सीमाएं

भारत के विभिन्न क्षेत्र, मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थान और कुंदकुंद ज्ञानपीठ के पांडुलिपि और डिजिटलीकरण कार्य से जुड़े क्षेत्र।

शोध प्रविधि

यह शोध द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है। अधिकांश आंकड़ें इंटरनेट पर उपलब्ध स्त्रोतों और साहित्य की समीक्षा करके प्राप्त किए गए हैं। मध्यप्रदेश इंदौर सहित कुंदकुंद ज्ञानपीठ में संग्रहित और उपलब्ध आंकड़ों का अध्ययन करके गुणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग करते हुए व्याख्यात्मक एवं अप्रत्यक्ष विधि के माध्यम से आंकडों का विशलेषण किया गया है।

Received : 28 Oct, 2018 Reviewed 9 Nov , 2018 Accepted : 19 Nov, 2018

शोध परिकल्पना

भारत में राष्ट्रीय परियोजना और निजि संस्थाओं द्वारा पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण किया जा रहा है।

आंकड़ों की समीक्षा एवं व्याख्या

सारिणी–1

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण की स्थिति

क्षेत्र	केंद्र संख्या	संस्थाओं के नाम	डिजिटलीकृत पांडुलिपियों की संख्या	डिजिटलीकरण (प्रतिशत में)
पूर्व	1	ओडिशा स्टेट म्यूजियम, उड़ीसा	4,777	8.65
	2	कृष्णाकांत हैंडीक लाइब्रेरी, गुवाहाटी, असम	2,091	3.78
मध्य	3	डॉ.हरीसिंह गौर यूनि.सागर, म.प्र.	1.010	1.83
	4	कुंदकुंद ज्ञानपीठ, इंदौर, म.प्र.	8,622	15.60
	5	भारत इतिहास संबोधन मंडल, पुणे	3,523	6.38
उत्तर	6	हिमाचल एकेडमी ऑफ आर्ट्स,कल्चर और लैंग्वेज, शिमला, हिमा.प्र.	225	0.41
	7	वृंदावन रिसर्च इंस्टी., वृंदावन, उ.प्र.	20,075	36.33
	8	भोगीलाल लहरचंद इंस्टी. ऑफ इंडोलॉजी	6,010	10.88
दक्षिण	9	फ्रेंच इंस्टी.ऑफ पॉडिचेरी, पॉडिचेरी	502	0.91
	10	इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडी, चेन्नई, तमिलनाडु	481	0.87
पश्चिम	11	आनंद आश्रम संस्थान, पुणे, महाराष्ट्र	7,939	14.37
कुल	11		55,255	100

(स्त्रोत : साहू, जे.,साहू, बी. मोहंती, बी, एवं कुमार, एन, 2013, पृष्ठ सं. 9)

सारणी –2

मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में पांडुलिपियों की स्थिति

क्र.	जिले का नाम	जैन भंडार	जैन पांडुलिपियां	जैनेत्तर भंडार	जैनेत्तर पांडुलिपियां	कुल भंडार	कुल पांडुलिपियां
1.	आगर	3	2433	0	0	3	2433
2.	अलीराजपुर	0	0	0	0	0	0
3.	अनूपपुर	0	0	2	170	2	170
4.	अशोक नगर	7	2366	0	0	7	2366
5	बड़वानी	3	218	0	0	3	218
6	बैतूल	3	177	3	284	6	461
7	भिंड	19	1661	1	14	20	1675
8	भोपाल	3	1089	5	839	8	1928
9	बुरहानपुर	1	183	0	0	1	183
10	बालाघाट	0	0	0	0	0	0
11	छतरपुर	20	2792	11	2328	31	5120
12	छिंदवाड़ा	4	138	0	0	4	138
13	दमोह	15	478	18	1951	33	2429
14	दतिया	7	1450	12	1640	19	3090
15	देवास	16	1626	1	81	17	1707
16	धार	10	1909	1	107	11	2016
17	डिंडौरी	0	0	0	0	0	0
18	गुना	8	842	8	2224	16	3066
19	ग्वालियर	23	4689	7	671	30	5360
20	हरदा	1	154	0	0	1	154
21	होशंगाबाद	3	283	0	0	3	283
22	इंदौर	36	8911	6	279	42	9190
23	जबलपुर	26	2787	1	1112	27	3899
24	झाबुआ	3	145	0	0	3	145
25	कटनी	6	469	0	0	6	469
26	खंडवा	4	163	0	0	4	163
27	खरगांव	10	515	0	0	10	515
28	मंडला	2	361	1	257	3	293
29	मंदसौर	13	1286	1	989	14	2275
30	मुरैना	10	331	0	0	10	331
31	नरसिंगपुर	6	252	1	4	7	256
32	नीमच	1	205	2	264	3	469
33	पन्ना	5	199	1	10	6	209
34	रायसेन	5	369	0	0	5	369
35	राजगढ़	3	97	0	0	3	97
36	रतलाम	7	11380	2	571	9	11951
37	रीवा	1	92	2	387	3	479
38	सागर	67	22952	54	8838	121	31790
39	सतना	3	181	15	5031	18	5212
40	सिहोर	6	720	0	0	6	720
41	सिवनी	4	322	0	0	4	322
42	सिंगरौली	0	0	0	0	0	0
43	शहडोल	0	0	5	138	5	138
44	शाजापुर	4	805	3	455	7	1260
45	श्योपुर	1	100	0	0	1	100
46	शिवपुरी	29	1535	4	39	33	1574
47	सीधी	1	82	0	0	1	82
48	विक्रमगढ़	54	2397	18	782	72	3179
49	उमरिया	0	0	0	0	0	0
50	उज्जैन	10	7864	6	22723	16	30587
51	विदिशा	6	2577	0	0	6	2577
	कुल जिलों की संख्या	469	89260	191	52188	660	141448

(स्त्रोत : जैन, ए. (2015). डिस्ट्रिक्ट–वाइज सर्वे ऑफ मेनुस्क्रिप्ट्स)

सारणी– 3

कुंदकुंद ज्ञानपीठ इंदौर, मध्यप्रदेश में डिजिटलीकृत पांडुलिपियों की स्थिति

क्रमांक	भंडार का नाम एवं स्थान	पांडुलिपियों की संख्या	स्कैन किए गए पृष्ठों की संख्या
1	अमर ग्रंथ, इंदौर	999	150052
2	अनूप भवन, इंदौर	46	14980
3	कुंदकुंद ज्ञानपीठ, इंदौर	649	71211
4	डॉ.अजीतकुमार कसलीवाल, इंदौर (व्यक्तिगत संग्रह)	03	59
5	श्री आदिनाथ दिगं.जैन मंदिर, सुदामा नगर,इंदौर	03	226
6	श्री अनंतनाथ जिनालय, छावनी, इंदौर	167	32074
7	श्री शांतिनाथ दिगं. जैन मंदिर, जावरा वाला पलासिया, इंदौर	05	700
8	सरस्वती भंडार श्री दिगं.जैन मंदिर, लशकारी गोठ, इंदौर	222	33402
9	श्री शांतिनाथ दिगं.जैन मंदिर, कल्याणभवन, इंदौर	169	26166
10	श्री दिगंबर.जैन मंदिर, तोड़ा की गोठ, इंदौर	220	50481
11	श्री दिगंबर जैन नरसिंगपुरा मंदिर, मानकचौक, इंदौर	174	25572
12	श्री दिगंबर जैन मंदिर, छावनी, इंदौर	201	36003
13	श्री दिगंबर जैन रामाशाह मंदिर,इंदौर	602	105639
14	श्री दिगंबर जैन समवशरण मंदिर, इंदौर	88	16852
15	श्री दिगंबर जैन तेरापंथी मंदिर, शक्कर बाजार, इंदौर	424	68597
16	श्री महावीर दिगं. जैन तेरापंथी मंदिर, तिलक नगर, इंदौर	01	746
17	श्री नेमिनाथ दिगं.जैन मंदिर,नेमि नगर,इंदौर	08	2577
18	श्री पार्श्वनाथ दिगं. जैन मंदिर, शक्कर बाजार, इंदौर	155	15741
19	सरस्वती भंडार दिगं.जैन मारवाड़ी मंदिर, इंदौर	1272	189675
20	श्री सरस्वती भवन,कांच मंदिर,इतवारिया बाजार, इंदौर	418	94721
21	श्री पार्श्वनाथ दिगं.जैन मंदिर, जावरीबाग नसिया,इंदौर	63	11038
22	श्री आदिनाथ दिगं.जैन मंदिर,बीजापुर,इंदौर	73	11510
23	श्री दिवाकर ग्रंथालय,रतलाम कोठी,इंदौर	468	13139
24	श्री वर्धमान श्वेताबंर स्थानकवासी ग्रंथालय,इंदौर	44	4768
25	श्री मालवीयभारती मंदिर, इंदौर	67	15297
26	श्री पार्श्वनाथ दिगं.जैन मंदिर, सूंठा, इंदौर	17	3674
27	श्री दिगं.जैन अतिशयश्रेत्र, बड़ेरियाजी, इंदौर	19	4339
28	श्री चंद्रप्रभु दिगं.जैन तेरापंथी मंदिर, इंदौर	579	108772
29	श्री दिगं.जैन मालवा प्रांतीक सभा औषधालय, बड़नगर, उज्जैन	112	12782
30	गणिनी ज्ञानमति शोधपीठ, इंदौर /हस्तिनापुर	238	35632
	कुल	**7506**	**11,56,373**

सारणी–1 में देश के भिन्न क्षेत्रों में जैन पांडुलिपियों और उनके डिजिटलीकरण की स्थिति को दर्शाया गया है।

सारणी–2 में मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में जैन भंडार में जैन पांडुलिपियों और जैन इतर् भंडारों और उनसे प्राप्त पांडुलिपियों को दर्शाया गया है। डॉ.अनुपम जैन एवं उनकी टीम के द्वारा मध्यप्रदेश में सर्वे करके 31.07.2015 को पांडुलिपियों की जिलानुसार रिर्पोट तैयार की गई है।

सारणी–3 18–19 अक्टूबर 1987 को आचार्य कुंदकुंद फेस्टिवल मनाया गया, इस महत्वपूर्ण दिवस पर श्री देवकुमार

सिंह कासलीवाल ने दिगंबर जैन आश्रम ट्रस्ट में एक शोध केंद्र स्थापित किया गया। इसके बाद कुंदकुंद ज्ञानपीठ पुस्तकालय की स्थापना की गई जो 1995 से एक महत्वपूर्ण शोध केंद्र के रूप में अपनी भूमिका अदा कर रहा है। जिसमें 5 विषयों में शोध कार्य किया जा रहा है और देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर द्वारा संबंद्धता प्रदान की गई है। यह 2002 से राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन के मेनुस्क्रिप्ट रिर्सोस सेंटर और मेनुस्क्रिप्ट कलैक्शन सेंटर के रूप में मान्यता दी गई। इस ज्ञानपीठ में पत्रों एवं चीड़ पत्रों पर लिखित संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में लिखित पांडुलिपियां संग्रहित हैं। इनकी स्थिति सारणी–3 में दर्शायी गई है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

देशभर में लगभग 57 पांडुलिपि संसाधन केंद्र और 50 पांडुलिपि संरक्षण केंद्र स्थापित हैं जिनमें प्रलेखों का भौतिक परिरक्षण एवं डिजिटल संरक्षण का कार्य किया जा रहा है। पांडुलिपियां किसी भी देश की सांस्कृतिक, एतिहासिक, कलात्मक विकास की सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण धरोहर है। शासन को इसके संरक्षण और संवर्धन के समुचित प्रयास करने चाहिए। सन् 1980 से कई पुस्कालय और संस्थाएं प्राकृतिक धरोहरों को सुरक्षित रखने की तकनीक के बारे में जागरूक हुई हैं। ज्ञान एवं अनुसंधान के क्षेत्र में डिजिटलीकरण तकनीक एक क्रांतिकारी तकनीक कदम साबित हुई है।

पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण के संबंध में कुछ सुझाव निम्नानुसार हैं–

1. पांडुलिपियों तक जनसामान्य एवं अनुसंधानकर्ताओं की आसान पहुंच उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन को एक वृहद योजना तैयार करनी चाहिए। रीजनल सेंटर्स की स्थापना करके यह कार्य किया जा सकता है।
2. सलाहकारी संस्थाओं के रूप में विशेषज्ञता बढ़ा कर डिजिटलीकरण करने वाली सभी परियोजनाओं को एनएमएम को अनुदान प्रदान करना चाहिए।
3. सांस्कृतिक धरोहर के रूप में पांडुलिपियों के महत्व के बारे में जागरूकता के प्रयास करना।
4. कुंदकुंद ज्ञानपीठ जैसे संगठनों जो पांडुलिपियों के संरक्षण और डिजिटलीकरण के लिए कार्य कर रहे हैं उन्हें प्रोत्साहित करना जिससे वे अधिक से अधिक डिजिटलीकरण कार्य को करते रहें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Bandi,S., Angadi, M.and Shrivaram, J.(2015). Emerging Technologies and Future of Libraries : Issue and Challenges. 332-339. Retrieved from.http://eprints.rclis.org/24577/ Digitization ETFL-2015.pdf.
2. Gaur, R.C.& Chakraborty, M. (2009). Preservation and Access to Indian Manuscripts : A Knowledge Base of Indian Cultural Heritage Resources for Academic Libraries Retrieved from. http://crl.du.ac.in/ica09/papers/index_files/ical-14_227_489_2_RV. pdf.
3. Gaur, R.C. (2011). Project Document NMM (2003). international journal of Information Research, 1 (1), 2.
4. Jain,A.and Mishra, S, M.P. Jain Scriptures Stores An Survey. Indore : Kundakunda Jnanapitha.
5. Wujastyk, D.(2014). Indian Manuscripts. In, Manuscripts Cultures : Mapping the Field 159-182.Europe.

■■